स्थैतिक तथा प्रावैगिक विश्लेशण

(Economics Deptt.)

(Static & Dynamic Economics Analyse)

स्थैतिक तथा प्रावैगिक शब्द मेकानिकस से ग्रहण किया है और August Comte ने पहली बार इस शब्द का परिचय सामाजिक विज्ञान के रूप में दिया है। दोनों शब्दों में स्पष्ट और वैज्ञानिक अन्तर सर्वप्रथम 1928 में Ragnar Frisch (रैगनर फ्रिश) ने प्रस्तुत किया है।

• **स्थैतिक विश्लेषण** : स्थैतिक शब्द का अर्थ है वह स्थिति जहाँ किसी पकार की गति न हो परन्तु अर्थशास्त्र में इसका अर्थ है ऐसी दशा जिसमें प्रतिदिन तथा प्रतिवर्ष कार्य समान गति से सरलता पूर्वक चलता रहता है। इस प्रकार हम यह कह सकते हैं कि स्थैतिक अवस्था वह अर्थव्यवस्था है जहाँ कोई परिवर्तन नहीं होते बल्कि संतुलन में होती है। सूचकांकों, चालू माँग, उत्पादन और वस्तुओं तथा सेवाओं की कीमतों का अपने आप समायोजन होता है।

प्रो० मार्शल के अनुसार स्थैतिक अर्थशास्त्र सक्रिय परन्तु अपरिवर्तनशील प्रक्रिया के लिए प्रयोग होना चाहिए। उदाहरण के लिए उन्होंने जंगल का उदाहरण दिया है जिसमें वृक्ष उगते और नष्ट होते रहते हैं परन्तु वन के शुद्ध क्षेत्रफल में कोई परिवर्तन (विस्तार या संकुचन) नहीं होने पाता। (e.g. पानी का टंकी-पानी का आना और बाहर निकलना इतना नियमित होता है कि जल स्तर में कोई परिवर्तन नहीं होता)।

स्थैतिक अर्थशास्त्र की विशेषताएँ (Characteristics of Static Economics) :

1. गति (Movement)
2. समय (Time)
3. सन्तुलन (Equilibrium)
4. बचत और विनियोग रहित अवस्था (Absence of saving & Investment)

1. स्थैतिक विश्लेषण में परिवर्तन निश्चित, समान एवं स्थिर गति से होता है।

2. स्थैतिक विश्लेषण में आर्थिक चर मूल्यों के बीच जो सम्बन्ध स्थापित किया जाता है वह एक ही समय से सम्बन्धित होता है जैसे किसी वस्तु का एक विशेष समय पर योग उसकी प्रचलित कीमत पर निर्भर करता है।

$$D_t = f(P_t)$$

$D_t P_t$ दो आर्थिक चर मूल्य है जो एक ही समयावधि से सम्बन्धित है।

3. स्थैतिक विश्लेषण में सन्तुलन की एक स्थिति का अध्ययन किया जाता है जिसमें परिवर्तन होता भी है तो क्षणिक रूप से। इस प्रकार स्थैतिक विश्लेषण में अन्य सभी तत्व स्थिर मानकर एक निश्चित बिन्दु का अध्ययन किया जाता है।

4. स्थैतिक स्थिति की एक अन्य विशेषता यह है कि इसमें न बचत की जाती है

और न विनियोग। चूँकि बचत और विनियोग दोनों ही शून्य रहते हैं इसलिए कुल बचत कुल विनियोग के बराबर होते हैं इसका कारण यह है कि स्थैतिक स्थिति में पूँजी का बचत नहीं होता इसलिए विनियोग भी नहीं होगा।

स्थैतिक अर्थशास्त्र का क्षेत्र (Scope of Static Economics) :

अर्थशास्त्र की बहुत सी विषय सामग्री स्थैतिक विश्लेषण पर आधारित है। इसका क्षेत्र इस प्रकार है –

1. सुप्रसिद्ध अर्थशास्त्री रॉबिन्स के अनुसार अर्थशास्त्र की दी गई परिभाषा का केन्द्र बिन्दु स्थैतिक अर्थशास्त्र के क्षेत्र में ही जमा हुआ था।
2. प्रतिष्ठित अर्थशास्त्रियों द्वारा प्रतिपादित स्वतन्त्र व्यापार का सिद्धान्त स्थैतिक अर्थशास्त्र के अध्ययन के अन्तर्गत ही आता है।
3. कीमत निर्धारण के सिद्धान्त में औसत लागत (Average cost) की अपेक्षा सीमान्त लागत भी स्थैतिक अर्थशास्त्र के अन्तर्गत ही आती है।
4. अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार के सिद्धान्त का अध्ययन भी स्थैतिक अर्थशास्त्र के अन्तर्गत आता है।
5. तुलनात्मक लागत का सिद्धान्त व लगान का सिद्धान्त, जिसमें समय का विशेष महत्व नहीं रहता, स्थैतिक अर्थशास्त्र के अन्तर्गत में आते हैं।
6. व्यापार चक्र सम्बन्धी सिद्धान्त स्थैतिक एवं प्रावैगिक अर्थशास्त्र की सीमा रेखा पर स्थित है और कुछ स्थैतिक अर्थशास्त्र के अन्तर्गत आता है और कुछ प्रावैगिक अर्थशास्त्र के अन्तर्गत।
7. सीमान्त उपयोगिता ह्रास नियम में भी समय तत्व सम्मिलित नहीं होता।
8. एकाधिकारात्मक मूल्य का सिद्धान्त भी स्थैतिक अर्थशास्त्र का एक अंग है।
9. राष्ट्रीय आय के वितरण पर भी समय परिवर्तन का बहुत कम प्रभाव पड़ता है।

स्थैतिक अर्थशास्त्र का महत्व (Importance of Static Economics)

1. **परिवर्तनशील अर्थव्यवस्था के अध्ययन में सहायक (Helpful in Studying Dynamic Economy) :** अर्थव्यवस्था की कार्यविधि अत्यन्त कठिन है तथा आर्थिक तत्वों में निरन्तर परिवर्तन होते रहते हैं अतः इस परिवर्तनशील अर्थव्यवस्था का वैज्ञानिक अध्ययन अत्यन्त कठिन है। और इसके लिए हमें स्थैतिक रीति का सहारा लेना पड़ता है।
2. **कीन्स का सिद्धान्त (Keynsian Principles) :** धनात्मक बचत के सिद्धान्त को कीन्स विश्लेषण के सभी घटक स्थैतिक प्रकृति के हैं। अनैच्छिक बेरोजगारी, छोड़कर कीन्स विश्लेषण के सभी घटक स्थैतिक प्रकृति के हैं। अनैच्छिक बेरोजगारी, तरलता पसन्दगी पूँजी की सीमान्त उत्पादकता और सीमान्त उपभोग प्रवृति इन सभी घटकों की व्याख्या करते हुए कीन्स ने एक बार समाप्त परिवर्तन दिखाया है जो स्थैतिक विश्लेषण का प्रयोग है।

3. **प्रत्याशाएँ (Expectations)** : प्राय: प्रावैगिक अर्थशास्त्र के क्षेत्र में आती है परन्तु प्रत्याशाओं में एक बार समाप्त परिवर्तन (once overchange) के प्रयोग को स्थैतिक विश्लेषण के द्वारा अध्ययन किया जाता है।

4. **तुलनात्मक स्थैतिक के अध्ययन हेतु (To study comparative statics)** : इसका एक लाभ यह भी है कि वह संतुलन एक स्थिति की दूसरी से तुलना करने में सहायता देता है इसे तुलनात्मक स्थैतिक कहते हैं जो कि आर्थिक स्थैतिक पर आधारित है।

5. **जटिल समस्याओं के समाधान में महत्व (Importance in solution of complicated problem)** : आर्थिक स्थैतिकी में हम यह अध्ययन करते हैं कि एक व्यक्ति अधिकतम सन्तुष्टि प्राप्त करने के लिए अपनी सीमित आय को विभिन्न वस्तुओं में किस प्रकार बाँटती है ? एक उत्पादक दिये हुए उत्पादन साधनों को अनुकूलतम ढंग से मिलाकर कैसे अधिकतम लाभ प्राप्त करता है। वस्तुओं और सेवाओं की कीमतें कैसे निर्धारित होती है और राष्ट्रीय आय का वितरण उत्पत्ति के विभिन्न साधनों में किस प्रकार होता है ? इन सब समस्याओं का हल करने में स्थैतिक विश्लेषण का सहारा लेना पड़ता है।

प्रावैगिक अर्थशास्त्र
(Dynamic Economics)

प्रावैगिक अर्थशास्त्र के अन्तर्गत अर्थव्यवस्था में होने वाले निरन्तर परिवर्तनों व इन परिवर्तनों को प्रभावित करने वाले तत्वों तथा "परिवर्तनों की प्रक्रिया" का विश्लेषण किया जाता है। प्रावैतिक अर्थशास्त्र की परिभाषा के सम्बन्ध में अर्थशास्त्री एक मत नहीं है रागनर फ्रिश द्वारा दी गई परिभाषा प्रावैगिकी की सर्वश्रेष्ठ है। उनके अनुसार, "प्रावैगिक विश्लेषण के अन्तर्गत हमारे अध्ययन का विषय "अस्थिरता के बजाय" परिवर्तन की प्रक्रिया का विश्लेषण करना है।"

प्रावैगिक अर्थशास्त्र का क्षेत्र (Scope of Dynamic Economies) :

इसके अन्तर्गत मुख्य रूप से उन समस्याओं का अध्ययन किया जाता है जो सन्तुलन से सम्बन्धित हो और जिसमें समय तत्व जुड़ा हुआ होता है।

1. जनसंख्या वृद्धि का नियम आर्थिक प्रावैगिक के क्षेत्र का एक विषय है।
2. व्यापार चक्रों का अध्ययन प्रावैगिक अर्थशास्त्र का विषय है क्योंकि प्रावैगिक विश्लेषण द्वारा ही इनकी प्रकृतिक को ठीक प्रकार से समझा जा सकता है।
3. Dr. Marshall की "आभास-लगान की धारणा" भी इस विश्लेषण से सम्बद्ध है।
4. लाभ व विनियोग के सिद्धान्त भी प्रावैगिक के क्षेत्र के अन्तर्गत आते हैं।

5. आर्थिक विकास एवं नियोजन के सिद्धान्तों का अध्ययन भी प्रावैगिक विश्लेषण द्वारा ही किया जा सकता है।
6. वे सभी आर्थिक समस्याएँ जो मनोवैज्ञानिक तत्वों से प्रभावित होती है वे इस क्षेत्र में रखी गई है।
7. "ब्याज का सिद्धान्त" भी प्रावैगिक अर्थशास्त्र से जुड़ा हुआ है क्योंकि ब्याज भुगतान का समय तत्व से घनिष्ठ सम्बन्ध होता है।

प्रावैगिक अर्थशास्त्र की विशेषताएँ (Characteristics of Dyamic Economics) :

1. प्रावैगिक अर्थशास्त्र के अन्तर्गत "परिवर्तन की प्रक्रिया में समय को स्पष्ट मान्यता" दी जाती है।
2. यह अर्थव्यवस्था में तुरन्त समायोजन की मान्यता को स्वीकार नहीं करता।
3. यह बताता है कि किस प्रकार एक स्थिति का पिछली स्थिति में विकास होता है। संक्षेप में "प्रवैगिक विश्लेषण का सम्बन्ध समय व विकास दोनों से ही है।
4. रुचि, तकनीक, जनसंख्या, साधन व संगठन जैसे आर्थिक तत्वों में परिवर्तन होने के कारण ही साम्य अपनी स्थिति में विचलित होता रहता है।

प्रायोगिक अर्थशास्त्र का महत्व (Significance for Importance of Dynamic Economics)

1. **वास्तविकता के अधिक निकट (More Near to Reality) :** प्रावैगिक अर्थशास्त्र, स्थैतिक की अपेक्षा वास्तविकता के अधिक निकट है क्योंकि यह स्थैतिक अर्थशास्त्र की तरह वास्तविक मान्यताओं जैसे पूर्ण प्रतियोगिता, पर आधारित नहीं है तथा यह व्यवहार के परिवर्तनों को अध्ययन करता है, जैसे–रुचि, साधनों व प्रविधि आदि को स्थिर व अपरिवर्तनशील नहीं मानता।
2. **समस्याओं का अध्ययन :** बहुत सारी समस्याओं का अध्ययन प्रावैगिक द्वारा ही सम्भव है, जैसे–(a) आंशिक सन्तुलन तथा निरन्तर परिवर्तन के परिणामस्वरूप उत्पन्न होने वाली समस्याओं का अध्ययन प्रावैगिक अर्थशास्त्र ही कर सकता है। (b) जनसंख्या सम्बन्धी समस्याएँ, व्यापार चक्र, विनियोग व लाभ के सिद्धान्त आदि का अध्ययन तथा उचित विश्लेषण प्रावैगिक अर्थशास्त्र द्वारा ही किया जा सकता है। (c) मार्शल की लाभांश लगान की धारणा में भी प्रावैगिक अंश विद्यमान है।
3. अधिक लोचदार (More Flexible)–प्रायोगिक विश्लेषण का एक गुण यह भी है कि यह अधिक लोचदार होती है जिसके परिणामस्वरूप सभी प्रकार की सम्भावनाओं की खोज की जा सकती है। इस लचीलेपन के कारण ही यह आर्थिक विकास, कल्याणवादी अर्थशास्त्र तथा नियोजन सम्बन्धी समस्याओं के अध्ययन में विशेष रूप से सहायक सिद्ध होती है। विकास का अर्थ है अर्थव्यवस्था के अन्तर्गत दशाओं में परिवर्तन होना।

4. **कीन्स के सिद्धान्त में महत्व (Importande in Keynsian theory) :** कीन्स का "सामान्य सिद्धान्त" अधिक सामान्य प्रावैगिक व्यवस्था के रूप में माना जाता है जो समय के माध्यम से कुल राष्ट्रीय आय के निर्धारण से सम्बन्ध रखता है। चूँकि राष्ट्रीय आय के सम्बन्ध में समय तत्व बहुत रहता है इसलिए वह प्रावैगिक है।

Differe between static & Dynamic Economics

Static	Dynamic
समय : इसमें अधिक चर मूल्यों के बीच जो सम्बन्ध स्थापित किया जाता है एक ही समय से सम्बन्धित होता है।	इसमें आर्थिक चर मूल्यों के बीच जो सम्बन्ध स्थापित किया जाता है। वह विभिन्न समयावधियों से सम्बन्धित होता है।
गति : इसमें परिवर्तन नियमित, समान एवं स्थिर गति से होते हैं।	इसमें परिवर्तन नियमित सतान एवं स्थिर गति से नहीं होते हैं।
मान्यताएं: इसमें अन्य सभी तत्व स्थिर मानकर एक निश्चित बिन्दु का अध्ययन किया जाता है।	इसमें सभी तत्वों के परिवर्तन का एक साथ अध्ययन किया जाता है।
संतुलन: इस विश्लेषण के अन्तर्गत साम्य की केवल एक ही अवधारणा का अध्ययन किया जाता है।	इस विश्लेषण के अन्तर्गत एक साम्य से दूसरे साम्य में पहुँचने वाले सम्पूर्ण रास्ते का अध्ययन किया जाता है।
तिथि निर्धारण : इस सिद्धान्त में सभ चर एक ही अवधि से सम्बन्धित होते हैं इसलिए तिथि निर्धारण आवश्यक नहीं है।	इस विश्लेषण में तिथिकरण का बहुत बड़ा महत्वपूर्ण स्थान है।
क्षेत्र : इस विश्लेषण का मुख्य क्षेत्र सीमान्त विश्लेषण है।	इस विश्लेषण का मुख्य क्षेत्र विकास माडल है।
सीमाएँ: यह विश्लेषण उन मान्यताओं पर आधारित है जो अवास्तविक है, जैसे–पूर्ण प्रतियोगिता व पूर्ण ज्ञान आदि।	यह विश्लेषण वास्तविक मान्यताओं पर पर आधारित है।